राजस्थान का इतिहास - एक परिचय

PDF Part - 3

☛ **सिंगोली का युद्ध किनके मध्य हुआ?**
(1) नासिरूद्दीन मुहम्मद तुगलक व राणा हम्मीर
(2) फिरोज शाह तुगलक व राणा हम्मीर
(3) मुहम्मद बिन तुगलक व राणा हम्मीर
(4) जलालुद्दीन खिलजी व राणा हम्मीर (3)

व्याख्या–सिंगोली बाँसवाड़ा जिले में है।
- सिसोदा ठिकाने के जागीरदार हम्मीर ने 1326 ई. में चित्तौड़ पर अधिकार कर गुहिल वंश की पुनः स्थापना की। सिसोदा का जागीरदार होने से उसे सिसोदिया कहा गया।
- हम्मीर के दादा लक्ष्मण सिंह अपने पुत्रों के साथ अलाउद्दीन खिलजी के विरूद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे।

☛ **''विषमघाटी पंचानन'' एवं ''मेवाड़ के उद्धारक'' किसे कहते हैं?**
(1) राणा हम्मीर (2) रतन सिंह
(3) महाराणा कुंभा (4) महाराणा प्रताप (1)

व्याख्या–हम्मीर को 'मेवाड़ के उद्धारक' की संज्ञा दी जाती है। राणा हम्मीर को 'विषमघाटी पंचानन' (विकट आक्रमणों में सिंह के सदृश्य) की संज्ञा राणा कुम्भा की कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति में दी गई है।
- महाराणा हम्मीर का शासनकाल 1326-1364 ई. तक था।
- रसिक प्रिया नामक टीका में महाराणा हम्मीर को 'वीर राजा' की उपाधि दी गई। रसिक प्रिया की रचना राणा कुम्भा ने की।

☛ **मारवाड़ के रणमल की बहन हंसा बाई का विवाह किनके साथ हुआ?**
(1) राणा मोकल (2) राणा लाखा
(3) राणा कुंभा (4) राव जोधा (2)

व्याख्या–1382 ई. में महाराणा लाखा मेवाड़ का शासक बना।
- मारवाड़ के रणमल की बहन हंसाबाई का विवाह लाखा के पुत्र चूण्डा के साथ होना था, मगर परिस्थितिवश यह विवाह लाखा के साथ सम्पन्न हो गया। इस विवाह के साथ यह शर्त थी, कि मेवाड़ का उत्तराधिकारी हंसाबाई का पुत्र ही होगा, जिससे लाखा के योग्य पुत्र चूण्डा को राज्याधिकार से वंचित होना पड़ा।
- चूण्डा का राजस्थान का भीष्म पीतामह कहा जाता है।

☛ **लाखा के समय एक बंजारे ने कौनसी झील का निर्माण करवाया?**
(1) आनासागर (2) जयसमंद झील
(3) पिछौला झील (4) फतेहसागर झील (3)

☛ **मेवाड़ के किस राजा के शासनकाल में जावर में चाँदी की खान की खान निकली ?**
(1) राणा हम्मीर (2) राणा लाखा
(3) राणा मोकल (4) राणा कुम्भा (2)

व्याख्या–राणा लाखा के शासनकाल में जावर (उदयपुर) से चाँदी की खान निकली।
- राणा लाखा के दरबार में झोटिंग भट्ट व धनेश्वर भट्ट नामक संस्कृत के विद्वान रहते थे।
- राणा लाखा के बाद मेवाड़ की गद्दी पर राणा मोकल (हंसाबाई का पुत्र) बैठा।

☛ **महाराणा मोकल कब शासक बना?**
(1) 1421 ई. में (2) 1437 ई. में
(3) 1433 ई. में (4) 1415 ई. में (1)

व्याख्या–मोकल महाराणा लाखा व हंसाबाई का पुत्र था। 1421 ई. में जब शासक बना तो अल्पायु का होने के कारण चूण्डा ने उसके संरक्षक के रूप में कार्य कियां।
- राणा मोकल के दरबार में योगेश्वर भट्ट व विष्णु भट्ट नामक विद्वान व फना, मना, विसल नामक वास्तुकार दरबार की शोभा बढ़ाते थे।
- 1433 ई. में मोकल की जीलवाड़ा में चाचा व मेरा ने महपा पंवार के साथ मिलकर हत्या कर दी।

☛ **कुंवर चूण्डा मेवाड़ को छोड़कर किस स्थान पर पलायन कर गये थे?**
(1) उज्जैन (2) माण्डू
(3) चम्पानेर (4) काल्पी (2)

व्याख्या–जब कुंवर चूण्डा को लगा कि हंसाबाई उस पर संदेह करती है तो वह मेवाड़ छोड़कर माण्डू के सुल्लान होशंगशाह के पास चला गया।
- चूण्डा के मेवाड़ से चले जाने के बाद हंसाबाई ने अपने भाई रणमल राठौड़ को मोकल के संरक्षक का कार्य करने हेतु मेवाड़ बुलाया।

☛ **राणा मोकल के बाद मेवाड़ का शासक कौन बना?**
(1) राणा सांगा (2) राणा कुम्भा
(3) पृथ्वीराज (4) राजसिंह (2)

व्याख्या–मोकल की मृत्यु के बाद उसका पुत्र महाराणा कुम्भा 1433 ई. में शासक बना।
- नागौर के उत्तराधिकार को लेकर मेवाड़ व गुजरात के मध्य युद्ध हुआ जिसमें गुजरात की पराजय हुई।
- 1453 ई. में कुम्भा ने मारवाड़ से मण्डोर छीन लिया, परन्तु बाद में संधि कर अपने पुत्र रायमल का विवाह मारवाड़ की राजकुमारी श्रृंगार देवी से कर दिया। इसकी जानकारी श्रृंगार देवी द्वारा निर्मित 'घोसुण्डी बावडी' पर लगी प्रशस्ति से मिलती हैं।

☛ कविराजा श्यामलदास के अनुसार मेवाड़ के 84 दुर्गों में से कुम्भा ने कितने दुर्गों का निर्माण करवाया?

(1) 17 (2) 32
(3) 42 (4) 45 (2)

व्याख्या–कुम्भा ने मेवाड़ के 84 दुर्गों में से 32 दुर्गों का निर्माण करवाया जिनमें सिरोही, अचलगढ़ वं कुम्भलगढ़ प्रसिद्ध है। कुम्भलगढ़ दुर्ग का निर्माण शिल्पी मण्डन था।

☛ सांगरपुर का युद्ध कब हुआ?

(1) 1227 ई. में (2) 1437 ई. में
(3) 1527 ई. में (4) 1419 ई. में (2)

व्याख्या–मालवा के शासक मोहम्मद खिलजी प्रथम व महाराणा कुंभा के बीच में युद्ध हुआ था। कुंभा ने जीत के उपलक्ष में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया।

☛ कुंभा द्वारा लिखित ग्रंथ है–

(1) संगीतराज (2) संगीत मीमांसा
(3) सूड प्रबंध (4) उपरोक्त सभी (4)

व्याख्या–

- कुंभा ने चित्तौड़ में कुंभ स्वामी मंदिर, श्रृंगार चवरी, एकलिंग का विष्णु मंदिर व रणकपुर के मंदिर का निर्माण करवाया।
- कुम्भा एक विद्वान एवं विद्यानुरागी शासक था। कान्ह व्यास द्वारा रचित एकलिंग महात्म्य से ज्ञात होता है कि वह वेद स्मृति, मीमांसा, उपनिषद्, व्याकरण एवं राजनीति में रुचि रखता था।
- संगीत राज, संगीत मीमांसा व सूड़ प्रबंध इसके द्वारा रचित ग्रंथ है।
- कुंभा ने चण्डीशतक पर व्याख्या, गीत गोविन्द और संगीत रत्नाकर पर टीका लिखी थी।
- महाराणा कुम्भा को राजस्थान स्थापत्य कला का जनक कहा जाता है।
- कुम्भा को साहित्यिक ग्रंथों और प्रशस्तियों में महाराजाधिराज, रावराय, दानगुरू , राजगुरू, परमगुरू, हालगुरू, अभिनव भरताचार्य हिन्दू सुरताण, चापगुरू, शैलगुरू, धीमान आदि नामों से पुकारा गया।
- महाराणा कुम्भा की हत्या उसके पुत्र ऊदा ने की थी। ऊदा को 'मेवाड़ का पितृहंता' कहते है।
- राणा कुम्भा ने बदनौर में कुशाल माता मंदिर का निर्माण करवाया था।

☛ मेवाड़ का कौनसा शासक हिन्दूपत के नाम ले जाना जाता था?

(1) राणा कुम्भा (2) राणा सांगा
(3) महाराणा मोकल (4) राणा उदयसिंह (2)

व्याख्या–महाराणा सांगा का जन्म 12 अप्रैल 1482 ई. को हुआ।

- 'हिन्दूपत' के नाम से प्रसिद्ध राणा सांगा 24 मई 1509 ई. में मेवाड़ को शासक बना।
- राणा सांगा (संग्रामसिंह) व उसके भाई पृथ्वीराज, जयमल व राजसिंह के मध्य उत्तराधिकार संघर्ष हुआ जिसमें सांगा विजय हुआ व मेवाड़ का शासक बना।
- महाराणा सांगा के राज्याभिषेक के समय मालवा पर सुल्तान नासिरुद्दीन, दिल्ली पर सिकंदर लोदी, गुजरात पर शासक महमूद शाह बेगड़ा का शासन था।
- कर्नल जेम्स टॉड ने राणा सांगा को 'सैनिकों का भग्नावशेष' कहा।

☛ पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान करके बनवीर से किसको बचाया–

(1) अजीत सिंह को (2) विक्रमादित्य को
(3) उदयसिंह को (4) इनमें से कोई नहीं (3)

व्याख्या– ध्यान रहे– *1567 ई. में अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया तो उदयसिंह ने किलों का भार जयमल व फत्ता को सौंपकर चले गये।*

- पन्नाधाय राजकुमार उदय सिंह की धाय माँ थी। पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन की बलि देकर उदयसिंह के प्राण बचाएं। इन्होंने उदयसिंह को चितौड़ दुर्ग से कुम्भलगढ़ दुर्ग भेज दिया जहां का किलेदार आशा देवपुरा था।

☛ सुमेलित नहीं है–

इतिहासकार	हल्दीघाटी युद्ध का उपनाम
(1) रणछोड़ भट्ट	मेवाड़ का मैराथन
(2) कर्नल जेम्स टॉड	हल्दीघाटी का युद्ध/मेवाड़ की थर्मोपोली
(3) बंदायूनी	गोगुंदा का युद्ध
(4) अबुल फजल	खमनौर का युद्ध (1)

व्याख्या–दिवेर के युद्ध को 'मेवाड़ का मैराथन' कर्नल जेम्स टॉड ने कहा।

- 18 जून 1576 ई. को खमनौर के पास मुगल सेना का प्रताप की सेना से युद्ध हुआ जो इतिहास में हल्दीघाटी के युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध में मुगल सेना का मुख्य सेनापति आमेर का मानसिंह था जबकि प्रताप की सेना के हरावल (अग्रिम दस्ता) का नेतृत्व हकीम खां सूर कर रहा था। युद्ध में प्रताप के जीवन पर संकट देखकर झाला बीदा ने प्रताप का मुकुट धारण कर युद्ध किया और प्रताप को युद्धभूमी से दूर भेज दिया।

☛ **महाराणा प्रताप का जन्म कब हुआ?**

(1) 9 मई 1542 ई. (2) 9 मई 1540 ई.
(3) 9 मई 1541 ई. (4) 9 मई 1946 ई. (2)

व्याख्या–महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई 1540 ई. में (ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया) को कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कटारगढ़ दुर्ग के बादल महल में हुआ।

- महाराणा प्रताप के पिता का नाम उदयसिंह व माता का नाम जयवंता बाई था। जयवंता बाई पाली नरेश अखैराज सोनगरा की पुत्री थी।
- महाराणा प्रताप भीलों में 'कीका' नाम से प्रसिद्ध हुए।
- महाराणा प्रताप का विवाह अजब दे पंवार के साथ 1557 ई. में हुआ।

☛ **महाराणा प्रताप मेवाड़ के शासक कब बने?**

(1) 1572 ई. (2) 1573 ई.
(3) 1571 ई. (4) 1570 ई. (1)

व्याख्या–महाराणा प्रताप के पिता उदयसिंह की मृत्यु 28 फरवरी 1572 ई. में गोगुन्दा में हुई। उदयसिंह ने अपनी मृत्यु से पहले अपनी प्रिय रानी जैसलमेर के भाटी राजवंश की पुत्री धीरबाई से उत्पन्न पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, लेकिन उदयसिंह के दाह संस्कार के बाद सामंतों ने गोगुन्दा जाकर जगमाल को गद्दी से हटाकर महाराणा प्रताप को 1 मार्च 1572 ई. को गद्दी पर बैठाया।

- महाराणा प्रताप को पहली बार राज्याभिषेक गोगुन्दा में हुआ। राज्याभिषेक के समय सलूम्बर के रावत कृष्णदास चूण्डावत ने प्रताप के कमर पर तलवार बांधी।
- महाराणा प्रताप का दूसरी बार राज्याभिषेक कुम्भलगढ़ दुर्ग में हुआ।

☛ **अकबर द्वारा राणा प्रताप को समझाने के लिए भेजे गए चार दूतों का सही क्रम है-**

(1) मान सिंह, जलाल खां, भगवंत दास, टोडरमल
(2) जलाल खां, टोडरमल, मानसिंह, भगवंत दास
(3) जलाल खां, मानसिंह, भगवंत दास, टोडरमल
(4) मानसिंह, भगवंत दास, टोडरमल, जलाल खां (3)

व्याख्या–अकबर द्वारा प्रताप को समझाने के लिए भेजे गए चार शिष्ट मण्डल–

1. जलाल खां कोरची	–	नवम्बर 1572 ई
2. मान सिंह	–	जून 1573 ई.
3. भगवंत दास	–	सितम्बर 1573 ई.
4. टोडरमल	–	दिसम्बर 1573 ई.

☛ **युद्ध में महाराणा प्रताप का जीवन संकट में देखकर महाराणा प्रताप का मुकुट धारण कर युद्ध किसने किया?**

(1) जेता में (2) कूँपा ने
(3) जाला बीदा ने (4) झाला अज्जा ने (3)

व्याख्या–अकबर द्वारा प्रताप के पास भेजी गई शिष्टमंडल जलालखान, मानसिंह, भगवानदास, टोडरमल।

- महाराणा प्रताप की सेना की ठरावल दस्ते का नेतृत्व हकीम खाँ 'सूरी' ने किया।
- युद्ध में महाराणा प्रताप पर संकट को देखकर झाला बीदा ने महाराणा प्रताप का मुकुट धारण कर युद्ध किया।
- बी.एन पनगड़िया ने झाला मन्ना को ही झाला बीदा बताया है।

☛ **हल्दीघाटी युद्ध की सेना में महाराणा प्रताप के हरावल दस्ते का नेतृत्व किसने किया ?**

(1) हाकिम खां सूरी (2) झाला मन्ना
(3) राणा पूंजा (4) जगन्नाथ (1)

व्याख्या–हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप के सेना की स्थिति–

हरावल	–	हाकिम खां सूरी
चन्दावल	–	राणा पूंजा, पुरोहित गोपीनाथ, जगन्नाथ, मेहता रतन चंद
वाम पार्श्व	–	झाला मन्ना, मानसिंह सोनगरा
दक्षिण पार्श्व	–	ग्वालियर के रामशाह अपने 3 पुत्रों (शालीवान, भवानी सिंह, प्रताप सिंह) के साथ

- **हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप के सहयोगी–**

ग्वालियर	–	रामशाह
प्रतापगढ़	–	काका कांधल
पाली	–	अखैराज सोनगरा, मानसिंह सोनगरा
सादड़ी	–	झाला बीदा
अन्य सहयोगी	–	भीमसिंह डोड़िया, रावत कृष्णदास, रावत सांगा, राठौड़, जैसा चारण, केशव चारण, भामाशाह, ताराचंद आदि

☛ **अब्दुर्रहीम खानखाना के परिवार को अमर सिंह ने कहां बंदी बनाया?**

(1) चावण्ड (2) माण्डल
(3) शेरपुर (4) चुलियां गांव (3)

व्याख्या–1580 ई. में महाराणा प्रताप के पुत्र में अमरसिंह ने शेरपुर के मुगल शिविर पर आक्रमण कर अब्दुर्रहीम खान खाना के परिवार की महिलाओं की बंदी बना लिया था। इस सम्पूर्ण घटनाक्रम की जानकारी मिलने पर प्रताप ने मुगल महिलाओं को ससम्मान सुरक्षित भिजवाने के आदेश दिए।

☛ दिवेर का युद्ध कब हुआ?

(1) 1578 ई. (2) 1582 ई.
(3) 1585 ई. (4) 1992 ई. (2)

व्याख्या–1582 ई. में दिवेर की मुगल चौकी पर आक्रमण के समय कुंवर अमर सिंह ने वहां तैनात मुगल अधिकारी सुल्तान खां को मार गिराया।

- कर्नल जेम्स टॉड ने दिवेर को 'मेवाड़ का मेराथन' कहा है।

☛ हल्दीघाटी युद्ध के बाद महाराणा प्रताप ने अपनी राजधानी कहां स्थापित की ?

(1) गोगुन्दा (2) कोल्यारी
(3) चावण्ड (4) जावर (3)

व्याख्या–हल्दीघाटी के युद्ध के बाद प्रताप की अस्थाई राजधानी आवरगढ़ थी जबकि स्थाई राजधानी चावण्ड को बनाया था। चावण्ड 28 वर्ष तक मेवाड़ की राजधानी रही। प्रताप की अंतिम व आपातकालीन राजधानी थी।

- **प्रताप की राजधानियों का क्रम**– गोगुन्दा, कुम्भलगढ़ आवरगढ़-कुम्भलगढ़-चावण्ड
- महाराणा प्रताप ने 1585 ई. में चावण्ड को अपनी राजधानी बनाया जो 1615 ई. तक मेवाड़ की राजधानी रही।

☛ महाराणा प्रताप की मृत्यु कब हुई ?

(1) नवम्बर 1597 (2) 19 जनवरी 1597
(3) 15 दिसम्बर 1597 (4) 3 मार्च 1597 (2)

व्याख्या–19 जनवरी 1597 ई. को महाराणा प्रताप की मृत्यु हुई थी। चावण्ड के पास बाण्डोली में प्रताप का अंतिम संस्कार किया गया। बाण्डोली में प्रताप की 8 खम्भों की छत्तरी बनी हुई है।

- मृत्यु के समय प्रताप की उम्र 57 वर्ष थी।
- प्रताप के बारे में कर्नल टॉड ने लिखा कि 'आल्पस पर्वत के समान अरावली में कोई भी ऐसी घाटी नहीं जी प्रताप के किसी न किसी वीर कार्य, उज्जवल विजय या उससे अधिक कीर्तियुक्त पराजय से पवित्र न हुई हो।

☛ उदयसागर झील व मोती मगरी के महलों का निर्माण किसने करवाया?

(1) उदयसिंह (2) महाराणा प्रताप
(3) जगतसिंह (4) अमर सिंह (1)

व्याख्या–उदयसिंह ने 1559 ई. मे उदयपुर नगर बसाया व उसे अपनी राजधानी बनाया। इन्होंने यहां उदयसागर झील व मोती मगरी के सुन्दर महलों का निर्माण भी करवाया।

☛ महाराणा उदयसिंह का राज्याभिषेक कब हुआ ?

(1) 1537 ई. (2) 1559 ई.
(3) 1540 ई. (4) 1542 ई. (1)

व्याख्या–मालदेव के सहयोग से 1537 ई. में 15 वर्ष की अल्पायु में कुम्भलगढ़, दरबार में उदयसिंह का राज्याभिषेक हुआ।

- 1543-44 ई. में जब अफगान शासक शेरशाह सूरी मेवाड़ पर आक्रमण के लिए बढ़ा तो उदय सिंह ने आक्रमण से पहले ही शेरशाह सूरी को चितौड़ दुर्ग की चाबियां सौंप दी। शेरशाह ने मियां अहमद सरवानी को चितौड़ दुर्ग को नियुक्त किया।
- उदयसिंह अफगान अधीनता स्वीकार करने वाला प्रथम मेवाड़ी शासक था।
- 25 जनवरी 1557 ई. में उदयसिंह व मेवात के हाजी खां के मध्य हरमाड़ा का युद्ध हुआ इसमें मालदेव की सहायता से हाजी खां विजयी हुआ। लेकिन डॉ. गोपीनाथ में शर्मा ने इस युद्ध में हाजी खां की पराजय का उल्लेख किया था।

☛ राणा उदयसिंह के समय अकबर ने चितौड़ पर आक्रमण कब किया?

(1) 1567 ई. (2) 1568 ई.
(3) 1562 ई. (4) 1565 ई. (1)

व्याख्या–अकबर ने 23 अक्टूबर 1567 ई. में चितौड़ दुर्ग पर घेरा डाला। अपने सरदारों की सलाह पर उदयसिंह किले की रक्षा का भार जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया को सौंप कर पहाड़ियों में चला गया। 24 फरवरी 1568 ई. में राजपूतों ने अकबर के विरुद्ध आक्रमण कर दिया इस आक्रमण में जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के साथ कल्ला राठौड़ वीरगति को प्राप्त हुए।

- 25 फरवरी 1568 ई. में फत्ता सिसोदिया की पत्नी फूल कंवर के नेतृत्व में 7000 राजपूत महिलाओं ने जौहर किया।
- 28 फरवरी, 1572 ई. को उदयसिंह की मृत्यु गोगुन्दा में हुई।
- "सांगा व प्रताप के मध्य उदयसिंह नहीं हुआ होता तो मेवाड़ का इतिहास और भी उज्ज्वल होता।" उक्त कथन जेम्स टॉड ने कहा।
- अकबर ने जयमल व फत्ता की वीरता से मुग्ध होकर आगरा के किले के बाहर उनकी हाथी पर सवार पत्थर की मूर्तियां लगवाई।

☛ राजसमंद झील का निर्माण किसने किया?

(1) राजसिंह ने (2) राणा लाखा ने
(3) राणा सांगा ने (4) अमरसिंह ने (1)

व्याख्या–गोमती नदी का पानी रोककर निर्माण किया। इस झील के उत्तरी किनारे पर नौ चौकी नामक स्थान पर राज प्रशस्ति 25 काले संगमरमर की शिलाओं पर खुदी हुई है।

- संस्कृत भाषा में लिखित राज प्रशस्ति शिलालेख की रचना रणछोड़ भट्ट द्वारा की गई।

☛ महाराणा प्रताप की मृत्यु के पश्चात मेवाड़ का शासक कौन बना?

(1) कर्णसिंह (2) जगत सिंह
(3) अमर सिंह (4) राजसिंह (3)

व्याख्या–अमरसिंह 1597 ई. में मेवाड़ का शासक बना। शासक बनने के उपरांत उसे मुगल आक्रमणों का सामना करना पड़ा। 1613 ई. में जहांगीर स्वयं अजमेर पहुंचा और शाहजादा खुर्रम (शाहजहां) को मेवाड़ अभियान का नेतृत्व सौंपा।

- महाराणा अमरसिंह व जहांगीर के मध्य 5 फरवरी 1615 ई. में मुगल मेवाड़ संधि हुई। इस संधि की शर्तें निम्न थी–
  1. मेवाड़ का महाराणा कभी भी मुगल दरबार में उपस्थित नहीं होगा बल्कि युवराज को मुगल दरबार में भेजेगा।
  2. चितौड़ दुर्ग पुन: मेवाड़ को लौटा दिया गया, मगर उसकी मरम्मत नहीं की जा सकती।

☛ मेवाड़ के महराणा राजसिंह के द्वारा किस राजकुमारी के साथ विवाह करने के कारण औरंगजेब उनसे नाराज था?

(1) रूपमती (2) चारूमती
(3) मानूमती (4) गुणवती (2)

व्याख्या–किशनगढ़ की राजकुमारी चारुमती जिसका विवाह औरंगजेब से होना था लेकिन राजसिंह ने 1660 ई. में चारूमती रहे विवाह कर लिया जिसके कारण औरंगजेब अप्रसन्न हो गया।

- 1679 ई. मे औरंगजेब द्वारा जजिया कर लगाने का राजसिंह ने विरोध किया।
- मुगल-मारवाड़ संघर्ष छिड़ने पर महाराणा राजसिंह ने राठौड़ों का साथ दिया।
- 1680 ई. में राजसिंह की मृत्यु हो गई।

☛ महाराजा राजसिंह का शासन काल था–

(1) 1597-1620 (2) 1628-1652
(3) 1652-1680 (4) 1632-1670 (3)

व्याख्या–महाराजा राजसिंह 1652 ई. में मेवाड़ का शासक बना। राजसिंह ने 'विजय कटकातु' की उपाधि धारण की।

- औरंगजेब ने राजसिंह को 6000 जात व सवार का मनसब प्रदान किया।
- राजसिंह ने 1664 ई. में उदयपुर में अम्बा माता मंदिर का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब के डर से श्रीनाथ जी की मूर्तियों को लेकर भागे गोसाई दामोदर व गोपीनाथ को राजसिंह ने शरण देकर सिहांड़ (नाथद्वारा) में श्रीनाथ जी की मूर्ति व कांकरोली (राजसमंद) में द्वारिकाधीश की मूर्ति स्थापित की।

☛ 1456 ई. में मालवा के मोहम्मद खिलजी प्रथम व गुजरात के कुतुबुद्दीन के बीच कौनसी संधि हुई?

(1) चम्पानेर की संधि (2) आवल बावल की संधि
(3) 1 व 2 दोनों (4) इनमें से कोई नहीं (1)

व्याख्या–1456 ई. में मालवा के महमूद खिलजी प्रथम व गुजरात के कुतुबुद्दीन के बीच चम्पानेर की संधि हुई। इस संधि में यह तय किया गया कि दोनों शासक मिलकर कुम्भा पर आक्रमण करके उसे हराकर उसके राज्य को बांट लेंगें।

☛ सुमेलित नहीं है–

शासक	सेनापति
(1) मालदेव	जैता-कूँपा
(2) उदय सिंह	जयमल-फत्ता
(3) हम्मीर चौहान	रणमल-रतिपाल
(4) महाराणा प्रताप	आल्हा-ऊदल (4)

व्याख्या–राजस्थान इतिहारा के जुड़वां सेनानायक–

1.	जैता-कूँपा	–	मालदेव
2.	गोरा-बादल	–	रतनसिंह
3.	जयमल-फत्ता	–	उदयसिंह
4.	आल्हा-उदल	–	परमर्दिदेव
5.	बालक-मदन	–	जैत्र सिंह
6.	रणमल-रतिपाल	–	हम्मीर देव
7.	धन्ना-भीमा	–	मानसिंह (मारवाड़)
8.	नुसरत खां-उलूग खां	–	अलाउद्दीन खिलजी

☛ कर्नल जेम्स टॉड ने मारवाड़ के राठौड़ों की वंशावली के आधार पर राठौड़ों को माना है?

(1) चन्द्रवंशी (2) सूर्यवंशी
(3) ब्राह्मल की संतान (4) कन्नौज शाखा का (2)

व्याख्या–कर्नल जेम्स टॉड ने मारवाड के राठौड़ों की वंशावली के आधार पर इन्हें सूर्यवंशी माना है।

- मुहणौत नैणसी ने मारवाड़ के राठौड़ों को कनौज से आने वाली शाखा बताया।
- जोधपुर राज्य की ख्यात में इन्हें राजा विश्युतमान के पुत्र राजा वृहद बल से पैदा होना बताया है।
- दयालदास ने इन्हें सूर्यवंशी माना है और इन्हें ब्राह्मण भल्लराव की संतान बताया है।

☛ मारवाड़ का आदिपुरुष किसे माना जाता है?

(1) राव जोधा (2) राव सीहा
(3) राव मालदेव (4) राव उम्मेदसिंह (2)

☛ **जैसलमेर के भाटी वंश का अंतिम शासक कौन था?**

(1) लूकाकरण (2) राव हरराय
(3) जवाहर सिंह (4) मूलराज (3)

व्याख्या–अकबर के नागौर दरबार (1570 ई.) में हरराय भाटी ने अकबर की अधीनता स्वीकार की तथा उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह किया।

- जैसलमेर का भारी राजवंश स्वयं को चन्द्रवंशीय यादवों से संबंधित करता है।
- विजयराज के शासनकाल से भाटियों का नियमित इतिहास मिलता है।
- विजयराज का पुत्र भोज हुआ जो गौरियों के विरुद्ध लड़ता हुआ मारा गया।
- भोज के उत्तराधिकारी जैसल ने जैसलमेर नींव रखी।

☛ **जयसिंह ने किसे ब्रजराज की उपाधि प्रदान की?**

(1) चुडामन को (2) बदन सिंह को
(3) सूरजमल को (4) बहादुर सिंह को (3)

व्याख्या–महाराज सूरजमल की मृत्यु रूहेलो के विरूद्ध युद्ध में हुई।

- बदनसिंह जाट नेता चूडामन का उत्तराधिकार था। जयसिंह ने बदनसिंह को ब्रजराज की उपाधि व जागीरें प्रदान की।
- बदनसिंह ने डीग, कुम्हेर, भरतपुर व वैर में दुर्गों का निर्माण करवाया।
- बदन सिंह की मृत्यु 1756 ई. में डीग में हुई।

☛ **महाराजा सूरजमल किस राज्य के शासक थे?**

(1) बीकानेर (2) जोधपुर
(3) भरतपुर (4) धौलपुर (3)

व्याख्या–महाराजा सूरजमल बदनसिंह का पुत्र व उत्तराधिकारी था। सूरजमल ने भरतपुर में नवीनगढ़ का निर्माण करवाकर उसे अपनी राजधानी बनाया।

☛ **महाराजा सूरजगल के बारे में निम्न में से कौनसा कथन सत्य है।**

(1) जयसिंह की मृत्यु के बाद हुए उत्तराधिकार युद्ध में सूरजमल ने ईश्वरी सिंह के पक्ष में युद्ध किया।
(2) 1760 ई. में अहमदशाह अब्दाली के विरुद्ध मराठों के पक्ष में लड़ा।
(3) 1763 ई. में रुहेलों के युद्ध विरुद्ध युद्ध में इसकी मृत्यु हो गई।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–1763 ई. में रुहेलों के विरुद्ध युद्ध में सूरजमल का प्रतिद्वंदी नजीब खान था।

☛ **"उसमें अपनी जाति के सभी गुण शक्ति, साहस, चतुराई, निष्ठा और कभी पराजय स्वीकार न करने वाली अदम्य भावना विद्यमान थी। महाराजा सूरजमल के बारे में उक्त कथन किसने कहा?**

(1) कालिकारंजन कानूनगों (2) गियर्सन
(3) सूर्यमल्ल मिश्रण (4) G.H. ओझा (1)

☛ **करौली के यादव वंश की स्थापना किसने की?**

(1) गोपालपाल (2) विजय पाल
(3) गणेशपाल (4) अर्जुनपाल (2)

व्याख्या–करौली के यादव वंश की स्थापना विजयपाल द्वारा 1040 ई. में की गई। विजयपाल ने बयाना (भरतपुर) को अपनी राजधानी बनाया।

☛ **करौली में "मदनमोहन मंदिर" का निर्माण किसने करवाया?**

(1) विजयपाल ने (2) जयपाल ने
(3) अजयपाल ने (4) अर्जुनपाल ने (1)

व्याख्या–करौली मे मदनमोहन मंदिर का निर्माण गोपालपाल ने करवाया।

- धर्मपाल द्वितीय ने 1650 ई0 में करौली को अपनी राजधानी बनाया।

☛ **1348 ई. में कल्याणपुर (वर्तमान करौली) की स्थापना किसने की–**

(1) विजयपाल ने (2) अजयपाल ने
(3) अजयराज ने (4) अर्जुनपाल ने (4)

व्याख्या–1348 ई में अर्जुनपाल ने कल्याणपुर बसाया, जिसे वर्तमान में करौली के नाम से जाना जाता है।

- महाराजा हरवक्षपाल ने 9 नवम्बर 1817 ई. में अंग्रेजों से संधि कर अधीनता स्वीकार की।
- 1852 ई. में नरसिंहपाल की मृत्यु के बाद डलहौजी ने करौली का विलय कंपनी राज्य में करने के लिए बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स से सिफारिश की।
- नरसिंह पाल की मृत्यु के बाद मदन पाल (1854-1869) को, करौली का शासक बनाया गया।

☛ **तेजपाल ने आबू के देलवाड़ा गांव में 'लूणवसही' नामक नेमीनाथ का मंदिर किसके शासनकाल में बनावाया ?**

(1) विक्रमदेव (2) सोमसिंह
(3) घूमराज (4) उत्पलराज (2)

व्याख्या–सोमसिंह के शासनकाल में तेजपाल ने आबू के देलवाड़ा गांव में 'लूणावसही' नामक नेमीनाथ का मंदिर बनवाया।

- विक्रमदेव का प्रपोत्र धारावर्ष (1163-1219 ई.) आबू के परमारों का शक्तिशाली शासक था।

☛ **आबू के परमार वंश के संस्थापक कौन थे?**

(1) विजयपाल (2) विरालसाही
(3) तेजपाल (4) धूमराज (4)

व्याख्या–आबू के देलवाड़ा में "लूणवसही नामक" नैमिनाथ का मंदिर तेजपाल ने बनवाया।

- आबू के परमार वंश का संस्थापक 'धूमराज' था लेकिन इनकी वंशावली उत्पलराज से प्रारंभ होती है।
- परमार शब्द का शाब्दिक अर्थ शत्रु को मारने वाला होता है।
- गुजरात के शासक मूलराज से पराजित होने के कारण आबू के शासक धरणी वराह को राष्ट्रकूट धवल की शरण लेनी पड़ी।

☛ **नाडौल के किस चौहान शासक ने 1311 ई. में परमारों की राजधानी चन्द्रावती पर अधिकार कर वहां चौहान प्रभुत्व की स्थापना की?**

(1) धारावर्ष (2) राव देवा
(3) राव लूम्बा (4) राव जेता (3)

☛ **1732 ई. में जयसिंह ने अपनी पुत्री कृष्णाकुमारी का विवाह किसके साथ किया?**

(1) दलेल सिंह (2) बुद्ध सिंह
(3) सरदार सिंह (4) धूमराज (1)

व्याख्या–1732 ई. में जयसिंह ने अपनी पुत्री कृष्णा कुमारी का विवाह दलेल सिंह के साथ कर दिया।

☛ **18 अप्रेल, 1734 ई. में मल्हार राव होल्कर और राणोजी सिंधिया के नेतृत्व में मराठी सेना ने किस रियासत पर चढ़ाई की?**

(1) अजमेर रियासत (2) जालोर रियासत
(3) बूँदी रियासत (4) कोटा रियासत (3)

व्याख्या–18 अप्रैल 1734 ई. को मल्हार राव होल्कर और राणोजी सिन्धिया के नेतृत्व में मराठा सेना ने बूंदी पर चढ़ाई की। चार दिन के संघर्ष के बाद 22 अप्रैल को बूंदी पर मराठों का अधिकार हो गया। बूंदी में महाराव उम्मेद सिंह का शासन स्थापित हो गया।। उम्मेदसिंह के अल्पायु के कारण प्रताप सिंह को शासन सौंपा गया। प्रतापसिंह दलेल सिंह का बड़ा भाई था। अपनी कृतज्ञता प्रकट करके लिए कच्छवाही रानी ने होल्कर के राखी बांधकर उसे अपना भाई बनाया।

☛ **हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता किसने की?**

(1) सवाई जयसिंह (2) महाराणा जगत सिंह
(3) अभयसिंह (4) जोरावर सिंह (2)

व्याख्या–राजस्थान के राजपूत राजाओं ने मराठों की बढ़ती शक्ति को रोकने के लिए 17 जुलाई 1734 को हुरड़ा (भीलवाड़ा) में एक सम्मेलन बुलाया। जिसकी अध्यक्षता मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह (द्वितीय) ने की। इसमें आमेर के सवाई जयसिंह जोधपुर के अभयसिंह, नागौर के बख्त सिंह, कोटा के महाराव दुर्जनसाल, बीकानेर के जोरावरसिंह, बूंदी का दलेल सिंह, करौली का गोपालदास, किशनगढ़ का राजसिंह आदि नरेश उपस्थित हुए।

☛ **हुरड़ा सम्मेलन के एक समझौते पर राजपूत राजाओं ने कब हस्ताक्षर किए?**

(1) 15 जुलाई 1734 ई. (2) 17 जुलाई 1734 ई.
(3) 18 जुलाई 1734 ई. (4) 19 जुलाई 1734 ई. (2)

व्याख्या–17 जुलाई 1734 ई. में हुरड़ा सम्मेलन के एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इसे समझौते के तहत यह तय हुआ कि–

- सभी शासक एकता बनाये रखेंगे, एक का अपमान सभी का अपमान समझा जायेगा।
- कोई राज्य दूसरे राज्य के विद्रोही को अपने राज्य में शरण नहीं देगा।
- वर्षा ऋतु के पश्चात् रामपुरा मे सभी एकत्रित होगें और यदि कोई शासक किसी कारणवश उपस्थित होने में असमर्थ होगा तो वह अपने पुत्र अथवा भाई को भेजेगा।

☛ **जयपुर में उत्तराधिकारी संघर्ष किस-किसके मध्य हुआ?**

(1) जयसिंह एवं मानसिंह
(2) मानसिंह एवं ईश्वर सिंह
(3) ईश्वर सिंह एवं माधो सिंह
(4) जयसिंह एवं माधो सिंह (3)

व्याख्या–ईश्वर सिंह की माता खींची रानी सूरज कंवर थी।

- 1708 ई. में सवाई जयसिंह ने मेवाड़ के महाराणा अमरसिंह द्वितीय की पुत्री चन्द्र कुंवर बाई से विवाह किया था। विवाह से पूर्व जयसिंह ने एक इकरारनामे पर हस्ताक्षर किये थे, जिसमें मेवाड़ की राजकुमारी हे उत्पन्न पुत्र को ही जयपुर के राजसिंहासन पर बैठाने की बात कही गई। 1722 ई. में जयसिंह की खींची रानी, सूरज कुंवर से एक पुत्र ईश्वरी सिंह उत्पन्न हुआ और 1728 ई. में मेवाड़ की राजकुमारी चन्द्रकुंवर से एक पुत्र माधो सिंह उत्पन्न हुआ था अत: जयसिंह के बाद माधोसिंह व ईश्वरी सिंह के बीच उत्तराधिकार का संघर्ष निश्चित हो गया।

☛ **राजमहल का युद्ध कब हुआ ?**

(1) 15 सितम्बर 1743 ई. (2) 1 मार्च 1747 ई.
(3) 13 दिसम्बर 1750 ई. (4) 10 जनवरी 1951 (2)

व्याख्या–राजमहल युद्ध जयपुर के उत्तराधिकार को लेकर सवाई जयसिंह के दोनों पुत्रों ईश्वरी सिंह व माधोसिंह के मध्य 1 मार्च 1747 ई. में लड़ा गया था। राजमहल के युद्ध में ईश्वरी सिंह विजय हुए।

☛ **बगरू का युद्ध कब हुआ ?**

(1) जून 1747 (2) सितम्बर 1748
(3) अगस्त 1748 (4) जुलाई 1748 (3)

व्याख्या–जयपुर के उत्तराधिकार को लेकर माधोसिंह व ईश्वरी सिंह के मध्य 1948 ई. को बगरू का युद्ध हुआ। इस युद्ध मे ईश्वरी सिंह पराजित हुआ।

- राजमहल युद्ध व बगरू युद्ध में मल्हार राव होल्कर ने माधोसिंह का साथ दिया।
- 13 दिसम्बर 1750 ई. में ईश्वरी सिंह ने आत्महत्या कर ली।
- इसके बाद होल्कर ने माधोसिंह को गद्दी पर बैठाया।

☛ **28 जुलाई, 1787 को मराठों और "राठौड़" कच्छवाहा गठबंधन" की सेनाओं के मध्य कौनसा युद्ध हुआ?**

(1) तुंगा का युद्ध (2) खजुआ का युद्ध
(3) धरमत का युद्ध (4) पहिवा का युद्ध (1)

व्याख्या–28 जुलाई 1887 को लालसोट के पास तूंगा नामक स्थान पर मराठों और 'राठौड़-कच्छवाह गठबंधन' की सेनाओ के मध्य युद्ध हुआ। यह युद्ध अनिर्णायक रहा। महादजी पीछे हट गया और राजपूत सेना का पलड़ा भारी रहा।

- **राठौड़-कच्छवाह गठबंधन**–प्रताप सिंह ने मराठों के विरूद्ध जोधपुर महाराजा विजय सिंह से गठबंधन किया।
- **तूंगा युद्ध में राठौड़ कच्छवाह गठबंधन के सहयोगी**–शिवपुर व करौली के शासक, मोहम्मद बेग हमदानी

☛ **जोधपुर उत्तराधिकारी संघर्ष किस-किसके मध्य हुआ?**

(1) भीमसिंह व मानसिंह
(2) रामसिंह व बख्तसिंह
(3) जगत सिंह व जोधा
(4) भीमसिंह व जोधा (2)

☛ **पाटन का युद्ध कब हुआ?**

(1) 16 अप्रैल 1800 (2) 20 जून 1790
(3) 28 जुलाई 1787 (4) 21 सितम्बर 1952 (2)

व्याख्या–मराठों व राजपूतों की सेना के मध्य 20 जून 1790 को पाटन का युद्ध हुआ जिसमें मराठों को निर्णायक जीत मिली। राजपूत सेना ने आत्मसमर्पण किया ।

- जयपुर के शासक प्रतापसिंह ने जोधपुर की सहायता से 16 अप्रैल 1800 को मालपुरा में पुन: मराठों से युद्ध किया। इस युद्ध मे मराठा विजय रहे तथा जयपुर राज्य को पुन: मराठों से संधि करनी पड़ी।

☛ **कृष्णा कुमारी विवाद किस-किसके मध्य हुआ?**

(1) भीम सिंह (मेवाड़) व जोधा (मारवाड़)
(2) मानसिंह (मेवाड़) व मानसिंह (मारवाड़)
(3) जगत सिंह (मेवाड़) व जोधा (मारवाड़)
(4) मानसिंह (मारवाड़) व भीम सिंह (मेवाड़) (4)

व्याख्या–कृष्णा कुमारी मेवाड़ राज्य की राजकुमारी थी।

- मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी से विवाह को लेकर जयपुर के शासक जगत सिंह और जोधपुर के शासक मानसिंह के मध्य युद्ध हुआ। 1807 ई. में गिंगोली का युद्ध हुआ। जिसमें जयपुर महाराजा जगतसिंह द्वितीय की जीत हुई। गिंगोली वर्तमान में परबतसर में है।
- कृष्णा कुमारी मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह की पुत्री थी, जिसकी सगाई मारवाड़ के शासक भीमसिंह के साथ तय हुई थी किंतु विवाह से पूर्व ही भीमसिंह की मृत्यु हो गई थी। भीमसिंह की मृत्यु के बाद कृष्णा कुमारी का रिश्ता जयपुर के शासक जगत-सिंह के साथ तय कर दिया था।
- 21 जुलाई 1810 ई. में कृष्णा कुमारी ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली।

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए इमेज पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स Free डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स Free डाउनलोड करने का एकमात्र Google वेबसाइट :- *Rajasthanclasses.in*

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी 👇👇

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें 👇

Google

rajasthanclasses.in

Telegram चैनल ज्वॉइन करें

YouTube पर ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

Click Here : Get More PDF